Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 08, October. 2024

स्वामी दयानन्द सरस्वती- सामाजिक समरसता के अग्रदूत

प्रो० (डॉ०) गिरीश कुमार सिंह *
प्राचार्य, शोध पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग
के० जी० के० कॉलेज, मुरादाबाद
डीपीबीएस कालेज, अनूपशहर
&
चेतना राणा, शोधार्थी
के० जी० के० कॉलेज, मुरादाबाद
डीपीबीएस कालेज, अनूपशहर

सारांश

पुनर्जागरण के प्रेरक स्वामी दयानंद सरस्वती भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख विचारक और समाज सुधारक हैं। स्वामी जी ने धर्म, शिक्षा और समाज सुधार के महत्वपूर्ण विषयों पर लोगों को जागरूक किया और सामाजिक समरसता के प्रसार हेतु समाज में फैले अंधविश्वास और अराजकता को दूर करने का प्रयास किया। इसके लिए स्वामी जी ने वेदों की तार्किक व्याख्या के माध्यम से बाल विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, अस्पृश्यता एवं स्त्री और शिक्षा जैसे मुद्दों पर बल दिया। आर्य समाज की स्थापना समाज सुधार की दिशा में स्वामी जी द्वारा उठाया गया एक प्रमुख कदम था। जिसके फलस्वरूप न सिर्फ समाज में मेलजोल और भाईचारे की भावना का विकास हुआ बल्कि इसने सामाजिक समरसता में भी वृद्धि की। इस संस्था के माध्यम से स्वामी जी ने ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, अवतार वाद, जातिवाद एवं अशिक्षा जैसे गंभीर समस्याओं को न सिर्फ सबके समक्ष उजागर किया अपितु इनके समाधान हेतु भी महत्वपूर्ण कदम उठाए। वैदिक साहित्यों की तार्किक व्याख्या एवं प्रचार द्वारा स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने वर्ण व्यवस्था एवं मूर्ति पूजा का खंडन किया। लोगों को अज्ञानता के तिमिर से दूर करने के लिए उन्होंने अनेक आर्य शिक्षण संस्थानों की भी स्थापना की। सत्यार्थ प्रकाश, यजुर्वेदभाष्य, संस्कारविधि, व्यवहार भानू एवं आर्योद्देश्यरत्नमाला जैसी महत्वपूर्ण कृतियों की रचना स्वामी जी का इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास था। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार द्वारा 'फूट डालो और राज करो' की पद्धति को अपनाया गया। जिसके परिणामस्वरूप, भारतीय जनमानस को धर्म, जाति व क्षेत्र आदि आधारों पर बांटने का प्रयास किया गया। ऐसे समय में स्वामी दयानंद सरस्वती ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने 'स्वराज' की अवधारणा को सबके समक्ष लाया और स्वतंत्रता के इस आंदोलन में सभी भारतीयों को एक होकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, सामाजिक समरसता के क्षेत्र में स्वामी दयानंद सरस्वती एक अग्रदूत के रूप में उभरे।

Keywords: सामाजिक समरसता, अंधविश्वास, आर्यसमाज एवं वैदिक शिक्षा प्रणाली आदि।

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान समाज सुधारक एवं वैदिक शिक्षा के प्रमुख प्रचारक थे। इनका जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के टंकारा नामक नामक गांव में हुआ था।(1) यह वह समय है , जब भारत में ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व स्थापित था व देश में उपनिवेशवाद की जड़े न सिर्फ आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में फैल रही थी अपितु सामाजिक एवं धार्मिक मामलों में भी ब्रिटिश सरकार अपनी नीतियों के माध्यम से भारतीय जनमानस के आम जीवन में हस्तक्षेप कर रही थी। 1813 के अधिनियम के द्वारा ईसाई मिशनरियों को भी धर्म प्रचार हेतु भारत में आने की अनुमति मिल गई थी।(2) जिसके परिणामस्वरूप भारतीयों को धर्मांतरण के लिए उत्प्रेरित किया जाने लगा था। इसके लिए पादरियों द्वारा भारत में व्याप्त वर्ण व्यवस्था को ढाल बनाकर निम्न वर्ग एवं वंचित लोगों को समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का लालच दिया जाता। इस समय समाज में पहले अंधविश्वास, जातिवाद, मूर्तिपूजा व तंत्र वाद

* Corresponding Author: Prof. Girish Kumar Singh
Email: gksingh.mbd@gmail.com
Received 04 Sep. 2024; Accepted 21 Oct. 2024. Available online: 30 Oct. 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

आदि कुरीतियों के कारण ब्रिटिश द्वारा ईसाई धर्म को सर्वोच्च एवं भारतीय संस्कृति की निष्कृष्ट को दर्शाया जाता और लोगों को धर्म परिवर्तन हेतु उकसाया जाता। ब्रिटिश सत्ता के इस विभाजनकारी चरित्र को उजागर करने हेतु भारतीय समाज में अनेक समाज सुधारक हुए, जिन्होंने न सिर्फ प्राचीन वैदिक संस्कृति की वास्तविक व्याख्या की अपितु वैदिक कर्मकांड के पीछे के विज्ञान का सही अर्थ व मिथ्या को लोगों तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया। 1829 में सती प्रथा जैसी कुरीति को राजा राममोहन राय द्वारा रोकने का प्रयास(3), 1828 में राजा राममोहन राय द्वारा ब्रह्म समाज की स्थापना आदि भी इसी दिशा में उठाया गया एक कदम था।(4) आगे चलकर केशव सेन, द्वारकानाथ टैगोर एवं आत्माराम पांडुरंग जैसे महान समाज सेवकों द्वारा भी भारत में जागरूकता फैलाने के सार्थक प्रयास किए गए, जिससे कि लोगों को अपने धर्म के प्रति सही जानकारी प्राप्त हो सके और सामाजिक कुरीतियों को रोका जा सके। इन सामाजिक सुधारकों की लोकप्रियता तीव्र गति के साथ बढ़ती देख कुछ पुरोहित वर्ग क्रोधित हो गए और इन संस्थाओं के प्रति उत्तर में उनके द्वारा ब्राह्मणवाद की व्यवस्था पर बल दिया गया जिससे कि समाज में जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था को बनाए रखा जा सके। इसके लिए उन्होंने प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या अपने तरीके से प्रस्तुत करना शुरू कर दी। जिससे कि पुरोहितवाद एवं सामाजिक पाद सोपानिक व्यवस्था पहले की भांति ही बनी रहे। इसके परिणामस्वरूप समाज में लोगों के बीच ऊंच- नींच , गरीब-अमीर, ब्राह्मण- शूद्र आदि भेदभाव बढ़ने लगा। इस कारण इस समय समाज में तंत्र वाद, मूर्तिपूजा,धार्मिक कर्मकांड एवं ब्राह्मण सर्वोच्चता आदि तीव्र रूप से बढ़ने लगे। इसने लोगों में अंधविश्वास एवं सामाजिक असमानता में वृद्धि की और आपसी समरसता को भी क्षति पहुंचाई।

अतः सामाजिक अराजकता का एक ऐसा वातावरण तैयार हुआ, जिसमें कि सभी विसंगतियां अपने चरम पर पहुंच गई और उन्होंने लोगों के आम जनजीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया। ऐसे ही समय में स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ।(5)उन्हें प्रारंभ से ही प्राचीन ग्रंथो की शिक्षा दी गई एवं ब्राह्मण कर्म कांडो से परिचित करवाया गया। इस सामाजिक एवं धार्मिक वातावरण का प्रभाव दयानंद सरस्वती पर पड़ा ,जिसने उन्हें बचपन से ही अत्यंत जिज्ञासु प्रवृत्ति का बालक बनाया। कहते भी है बच्चे की प्राथमिक पाठशाला इसका घर ही होता है। अतः उसके संस्कार भी उन्हीं परिस्थितियों के अनुसार विकसित होते हैं।

दयानंद सरस्वती प्रारंभ से ही साक्षात ज्ञान पर विश्वास करते थे और हमेशा तर्क एवं विज्ञान खोजने का प्रयास करते थे। उन्होंने बचपन से ही मूर्ति पूजा का खंडन किया और विभिन्न उपासना पद्धतियों को मानने से इनकार कर दिया।(6) गृहस्थ आश्रम को त्याग कर एक वे ब्रह्मचारी बन गए एवं कड़ी तपस्या और वैदिक ग्रंथों के अध्ययन के बाद उन्होंने उनके प्रचार का बीड़ा उठाया। साथ ही भारत में लोगों को अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति से अवगत कराने का भी निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने आर्य समाज नामक एक संस्था की स्थापना की, जिसका उद्देश्य 'वेदों की ओर लौटो' अर्थात् हमारे प्राचीन वैदिक ग्रंथ जो वास्तविक रूप से प्रमाणिक माने जाते हैं, उसमें लिखें ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाना और समाज में फैली कुरीतियों को इसके माध्यम से दूर करना है।

सामाजिक समरसता के क्षेत्र में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान

● वेदों के प्रचारक

स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों के महत्व को पुनः स्थापित किया और उनके प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने वेदों के सिद्धांतों को जनता के बीच पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं में उनके अनुवाद किए और लोगों को उनके प्रति जागरूक किया। “वेदों की ओर लौटो” का नारा देकर स्वामी जी ने लोगों को जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था से परे कर्म आधारित व्यवस्था को अपनाने को प्रोत्साहित किया।(7) स्वामी जी ने उपनिवेशवादी मानसिकता से भारतीयों को स्वतंत्र करवाने हेतु प्राचीन भारतीय ग्रंथों की तार्किक व्याख्या की, जिसने न सिर्फ बुद्धिजीवी वर्ग को अपितु आम जन मानस को भी प्रभावित किया। इसके फलस्वरूप लोगों को अपनी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का ज्ञान हुआ, जिसने समाज में बंधुत्व एवं एकता की भावना का विकास किया। इससे भारतीय राष्ट्रवाद की भावना भी प्रबल हुई और स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण कारक साबित हुई।(8)

● अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की प्रेरणा

स्वामी दयानंद सरस्वती के दृष्टिकोण में सर्वधर्म समभाव का अत्यंत महत्व था। उन्होंने धर्म, जाति, और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की प्रेरणा दी। उन्होंने धार्मिक सामंजस्य और सद्भावना की ओर लोगों को उन्मुख किया। स्वामी जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ के प्रथम समुल्लास में ‘ईश्वर’ के नाम की व्याख्या की गई है, जिसके अंतर्गत बताया गया है कि जिस प्रकार सभी धर्मों का मार्ग अलग अलग होता है परन्तु मंजिल एक ही है। उसी प्रकार ईश्वर के नाम अनेक हैं परन्तु ईश्वर एक ही है। इसके अतिरिक्त स्वामी जी द्वारा इस ग्रंथ के बारहवें, तेरहवें एवं चौदहवें समुल्लास में भी चार्वाक, बौद्ध, जैन, ईसाई एवं मुस्लिम मतों को सम्मिलित किया गया है। स्वामी जी ने सभी में मानवता को एक प्रमुख गुण बताया है, जो किसी भी धर्म और मत से ऊपर है। मानव धर्म को सर्वोच्च मानकर उन्होंने लोगों को सहिष्णुता की प्रेरणा दी ।(9)

● अपने समय के समाज को जागरूक करना

स्वामी दयानंद सरस्वती ने तत्कालीन समाज को सामाजिक समरसता की ओर प्रेरित करने हेतु सकारात्मक प्रयास किए। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों और जातियों के बीच मेलजोल को प्रोत्साहित किया और सामाजिक समानता के खिलाफ फैली कुरीतियों को दूर करने का कार्य किया।उन्होंने वेदों के माध्यम से समग्र मानवता को एक साथ लाने का प्रयास किया।इसके लिए स्वामी जी ने जगह जगह जाकर आत्म जागरूकता एवं आध्यात्मिकता का संदेश दिया। उन्होंने हरिद्वार, काशी, सहारनपुर, मेरठ, बुलंदशहर, अनूपशहर, मथुरा, नासिक, फिरोजाबाद, फर्रुखाबाद, आगरा, जोधपुर एवं अन्य कई स्थानों का भ्रमण कर ईश्वरीय संदेश एवं वेदों की महिमा का गुणगान किया।(10)

● आर्य समाज की स्थापना

1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई।(11) आर्य समाज का प्रमुख सिद्धांत है- 'एकता' , जिसमें बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों को समान दृष्टि से देखा जाता है। आर्य समाज लोगों को धर्म, जाति, क्षेत्र आदि आधारों से पृथक

लोगों को एक ऐसा समाज प्रदान करता है जहां सभी मनुष्य एक ईश्वर की संतान है और सभी का प्रमुख धर्म लोगों का कल्याण करना है।

- **भारतीय शिक्षण पद्धति को प्रोत्साहन**

स्वामी दयानंद सरस्वती ने ब्रिटिश शिक्षा पद्धति का विरोध किया और भारतीय शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि ब्रिटिश हमें औपनिवेशिक मानसिकता की जंजीरों में बंधक बना रहे हैं और भारतीयों को उन्हीं के देश में गुलाम बनाया जा रहा हैं। अतः हमें अपनी प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली को अपना कर सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना चाहिए। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा व्यक्ति का न सिर्फ बौद्धिक विकास करती है अपितु यह उसके चरित्र के विकास पर भी बल देती है। इसका उद्देश्य आत्मबोध एवं आध्यात्मिकता पर केंद्रित समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण को विकसित करना है। हमारी शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक ज्ञान के साथ साथ प्रकृति संरक्षण एवं नैतिकता का पाठ भी सिखाती है। स्वामी जी द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में संतानों की शिक्षा प्रणाली को विस्तारपूर्वक समझाया गया है।(11) इसके अतिरिक्त व्यवहार भानू एवं आर्योद्देश्यरत्नमाला में भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था का व्यापक वर्णन किया गया है। स्वामी जी इन आदर्शों से प्रेरणा लेकर नवीन शिक्षा नीति 2020 में भी वर्तमान सरकार द्वारा भी बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु मूल्यपरक एवं व्यवहारिक शिक्षा को वरीयता दी गयी है।(12)

- **वैश्वीकरण की अवधारणा**

स्वामी जी की द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश में एक विश्व की अवधारणा दी गई है अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार के समान है। अतः सभी गतिविधियों में सभी का सहयोग आवश्यक है, जिससे कि सभी का कल्याण संभव हो सके। इसके अंतर्गत लोगों को भाईचारे की भावना के साथ मिलजुल कर रहना और सद्भावना के साथ अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करने को प्रमुखता दी गई है।स्वामी जी द्वारा इस अवधारणा की पुष्टि हेतु ब्रह्मांड की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय आदि की भी व्याख्या की गई।(13) इसके अनुसार, समस्त पृथ्वी एक परिवार की भांति है अतः सभी लोगों को इसके विकास हेतु जाति, धर्म , क्षेत्र आदि को आधार मानकर विभाजित नहीं होना चाहिए।

- **पर्यावरण संरक्षण का संदेश**

स्वामी जी सादा जीवन उच्च विचार अवधारणा को अपनी जीवन शैली में अपनाए थे। वे लोगों को भौतिकवादी सुख के स्थान पर आध्यात्मिक सुख को स्वीकार करने को कहते थे। वे हमेशा प्रकृति परक जीवन व्यतीत करते एवं अन्य को भी संतुलित जीवन निर्वाह करने का संदेश देते थे।उनका मानना था कि ऐसा करने से न सिर्फ आत्मिक शांति एवं सुख की प्राप्ति होगी बल्कि पर्यावरण का संरक्षण भी संभव हो सकेगा। चूंकि प्रकृति पर उपलब्ध संसाधन सीमित हैं अतः उनका प्रयोग मानव को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करना चाहिए ना कि अपने लालच को। सभी मनुष्यों को साधारण जीवन जीने के प्रयास करने चाहिए।(14)

- **स्त्री शिक्षा एवं समानता**

स्वामी दयानंद जी ने स्त्री शिक्षा एवं समानता पर प्रारंभ से ही प्रमुख ध्यान दिया। उन्होंने इसके लिए कन्या महाविद्यालय एवं संस्थाएं स्थापित की। यथा स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही समाज में महिलाओं की दशा सुधर सकती है और उन्हें भी पुरुष के समान दर्जा मिल सकता है।(15)

● **मानवता एक प्रमुख धर्म**

स्वामी जी मानवता को सभी धर्म में सर्व प्रमुख मानते थे। मानवता ही का एक ऐसा मूल्य है, जो व्यक्ति को वास्तविक अर्थों में मनुष्य बनाता है। इसलिए धर्म, वंश ,जाति, जन्मस्थान एवं क्षेत्र आदि सभी के स्थान पर मानवता को वरीयता देनी चाहिए। इसके द्वारा ही समाज में फैली ईर्ष्या, द्वेष एवं नकारात्मकता को दूर कर शांति व सौहार्द स्थापित किया जा सकता है। स्वामी दयानंद सरस्वती जी का समाज में सामाजिक समरसता स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनके सिद्धांतों और विचारों ने समाज को एकता, समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय की ओर अग्रसर किया हैं। स्वामी जी ने समाज में अलग-अलग जातियों और समुदायों के लोगों के बीच अधिक सामंजस्य और प्रेम की भावना विकसित की है। उन्होंने जातिवाद, अंधविश्वास , अशिक्षा, बाल विवाह, सती-प्रथा आदि जैसी कुरीतियों के विरुद्ध लोगों को जागरूक किया और इनको दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने इसके लिए समाज में सामाजिक समरसता को प्रेरित करने के लिए एक प्रकाश-पुंज की भांति लोगों को सद्मार्ग प्रदर्शित किया।

निष्कर्ष

स्वामी दयानंद सरस्वती जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक महर्षि थे। जिन्होंने सामाजिक समरसता, साक्षरता, धार्मिक व लैंगिक समानता जैसे प्रमुख विषयों पर तर्कशील चिंतन करके लोगों को जागरूक किया।जिसके परिणामस्वरूप लोगों ने न सिर्फ आपसी एकता का परिचय दिया अपितु ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक होकर स्वराज की लड़ाई लड़ी। स्वामी जी ने धर्म, शिक्षा और समाज में सुधार लाने हेतु सकारात्मक मानवीय प्रयास किए, जिसमें सभी लोगों ने पूरा सहयोग किया। ब्रिटिश कालीन परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए स्वामी जी कई ब्रिटिश अधिकारियों से भी मिले और सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए उनका सहयोग भी मांगा। सती प्रथा, बाल विवाह, स्त्री अशिक्षा जैसे विषयों पर भी स्वामी जी ने वेदों की सरल व्याख्या करके जनता को उचित मार्ग दिखाने का प्रयास किया।

वर्तमान समय में विश्व में गरीबी, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, संप्रदायवाद, भ्रष्टाचार आदि जैसी चुनौतियां विद्यमान हैं। कुछ शक्तिशाली देशों द्वारा अपने हितों की पूर्ति हेतु अन्य देशों पर आक्रमण तक किया जा रहा है। औद्योगिक विकास के नाम प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। इस जटिल वातावरण में स्वामी दयानंद सरस्वती जी का वैदिक दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, जो हमें विश्व कल्याण एवं मानव धर्म की शिक्षा देता है।

अतएव, भारत भूमि पर आज दो सदी बाद भी स्वामी दयानंद सरस्वती जी का एक मार्गदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान है। वे सामाजिक समरसता के अग्रदूत के दूत के रूप में न सिर्फ भारत अपितु समस्त विश्व के लिए एक प्रेरणास्रोत है। स्वामी जी के आदर्शों का पालन करते हुए हम एक विश्वगुरु की भूमिका निभा सकते है ,जिससे न सिर्फ वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार रूप मिलेगा अपितु समस्त विश्व समुदाय का कल्याण भी संभव हो सकेगा।

संदर्भ-सूची :

1. Blavatsky, Madam, (1952), Autobiography of Pandit Dayanand Saraswati for the Theosophist.

2. चंद्र, विपिन, (2015), आधुनिक भारत का इतिहास, दिल्ली।

3. शुक्ल, रामलखन (2014), आधुनिक भारत का इतिहास, दिल्ली।

4. बंदोपाध्याय, शेखर, (2016), प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैक स्वान पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5. Sharda, Harvilas, (1946), Life of Dayanand, Vaidik Publication, Ajmer.

6. सरस्वती, दयानंद (2017), दयानंद शास्त्रार्थ संग्रह, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली ।

7. सरस्वती, दयानंद (2006), ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।

8. शुक्ल, रामलखन (2014), आधुनिक भारत का इतिहास, दिल्ली।

9. सरस्वती, दयानंद, (2016), सत्यार्थ प्रकाश, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

10. सत्यानंद, स्वामी, (2016), श्रीमद्द्यानंद प्रकाश, आर्य प्रकाशन, अजमेरी गेट, दिल्ली।

11. बंदोपाध्याय, शेखर, (2016), प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैक स्वान पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

12. भारत सरकार गजट, नई शिक्षा नीति २०२०

13. सरस्वती, दयानंद, (2016), सत्यार्थ प्रकाश, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

14. सरस्वती, दयानंद (1983), व्यवहार भानू, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

15. सरस्वती, महर्षि दयानंद, (1997), संस्कार विधि, रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत हरियाणा।